



325
Книга
Самблара

1

1.787

ASHA ARCHIVES

^{कथायादातयाकाव्यः सादाष्टि वृत्तयापीत्यमनः लः पुष्कः मानवक्रियासिद्धमनः ॥ १ ॥ पुष्कललेलायादिकिविधः ॥}
^{१ नानायागारी ॥ २ नानायागारी ॥ ३ नानायागारी ॥ ४ नानायागारी ॥ ५ नानायागारी ॥ ६ नानायागारी ॥ ७ नानायागारी ॥ ८ नानायागारी ॥ ९ नानायागारी ॥ १० नानायागारी ॥}
 नात्तां सुंयासिधेमां नूगानानिधेया ॥ छंदजिनायुष्टि किनां प्रयत्नं ॥
^{हिमादः ॥ १ ॥ २ नानायागारी ॥ ३ नानायागारी ॥ ४ नानायागारी ॥ ५ नानायागारी ॥ ६ नानायागारी ॥ ७ नानायागारी ॥ ८ नानायागारी ॥ ९ नानायागारी ॥ १० नानायागारी ॥}
 गालियस्यां नद्ययनि ॥ सिद्धा ॥ ४ ॥ यंदं दुषां प्रकृति ॥ धीनवकं ॥ यं मिः ॥
^{विदं निमां ननं रं प्रथं मकं ॥ मीकां रुले ॥}
 नंदं दृष्टं यिह कद्विपा नां ॥ विदं निमां ननं रं प्रथं मकं ॥ मीकां रुले ॥
^{लिखिताकनाः ॥ १ ॥ २ नानायागारी ॥ ३ नानायागारी ॥ ४ नानायागारी ॥ ५ नानायागारी ॥ ६ नानायागारी ॥ ७ नानायागारी ॥ ८ नानायागारी ॥ ९ नानायागारी ॥ १० नानायागारी ॥}
 कंठप्रिर्णं किना ना ॥ ४ ॥ न्येसा कना धादु प्रमं नयणं ॥ हृत् नय ॥ ४ ॥
^{सिद्धा ॥ १ ॥ २ नानायागारी ॥ ३ नानायागारी ॥ ४ नानायागारी ॥ ५ नानायागारी ॥ ६ नानायागारी ॥ ७ नानायागारी ॥ ८ नानायागारी ॥ ९ नानायागारी ॥ १० नानायागारी ॥}
 योलाह किनायं क्व ॥ २ ॥ यंदं दृष्टं यिह कद्विपा नां ॥ विदं निमां ननं रं प्रथं मकं ॥ मीकां रुले ॥

^{वर्तमानं ॥ १ ॥ २ नानायागारी ॥ ३ नानायागारी ॥ ४ नानायागारी ॥ ५ नानायागारी ॥ ६ नानायागारी ॥ ७ नानायागारी ॥ ८ नानायागारी ॥ ९ नानायागारी ॥ १० नानायागारी ॥}
 प्रविन्दं ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥
^{वर्तमानं ॥ १ ॥ २ नानायागारी ॥ ३ नानायागारी ॥ ४ नानायागारी ॥ ५ नानायागारी ॥ ६ नानायागारी ॥ ७ नानायागारी ॥ ८ नानायागारी ॥ ९ नानायागारी ॥ १० नानायागारी ॥}
 मनीं यं ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥
^{वर्तमानं ॥ १ ॥ २ नानायागारी ॥ ३ नानायागारी ॥ ४ नानायागारी ॥ ५ नानायागारी ॥ ६ नानायागारी ॥ ७ नानायागारी ॥ ८ नानायागारी ॥ ९ नानायागारी ॥ १० नानायागारी ॥}
 सात्तामि सुनिदि नयाणां ॥ स्तानं प्रकायित्वं ॥ यं ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥
^{वर्तमानं ॥ १ ॥ २ नानायागारी ॥ ३ नानायागारी ॥ ४ नानायागारी ॥ ५ नानायागारी ॥ ६ नानायागारी ॥ ७ नानायागारी ॥ ८ नानायागारी ॥ ९ नानायागारी ॥ १० नानायागारी ॥}
 प्रविदि विनं ॥ विद्यदिना नां ॥ प्रलद सा ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥

महाकविः १
 महाकविः २
 महाकविः ३
 महाकविः ४
 महाकविः ५
 महाकविः ६
 महाकविः ७
 महाकविः ८
 महाकविः ९
 महाकविः १०
 महाकविः ११
 महाकविः १२
 महाकविः १३
 महाकविः १४
 महाकविः १५
 महाकविः १६
 महाकविः १७
 महाकविः १८
 महाकविः १९
 महाकविः २०

महाकविः २१
 महाकविः २२
 महाकविः २३
 महाकविः २४
 महाकविः २५
 महाकविः २६
 महाकविः २७
 महाकविः २८
 महाकविः २९
 महाकविः ३०
 महाकविः ३१
 महाकविः ३२
 महाकविः ३३
 महाकविः ३४
 महाकविः ३५
 महाकविः ३६
 महाकविः ३७
 महाकविः ३८
 महाकविः ३९
 महाकविः ४०

महाकविः ४१
 महाकविः ४२
 महाकविः ४३
 महाकविः ४४
 महाकविः ४५
 महाकविः ४६
 महाकविः ४७
 महाकविः ४८
 महाकविः ४९
 महाकविः ५०

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

स्वयं विद्वान् गान्धर्वसु लानां कन्यायिकाभनमपश्यन् ॥ अ

नमो मधुना नमो मधुना ॥ ४ ॥ स्वर्गना कंसा मधुना मधुना ॥ ५ ॥

धनायां सखी सभेन समादिदक्षययं नितुं ॥ यं ह्यर्थि

कामं चिकीर्षमादय ४: छुष्ट्रसमाणां गिविरं नू मन्। विकान्तः

पूजा विधिनामसूत्राद्विधिवर्णनसमन ४३ आदिहोत्रात् २ पविर्जायुजी २ पविदन्तिनीसयिपदयुल
 नविप्रवेष्ट्याः पूजायामसमवसर्गेषु २ लयः १ पवित्रयौक सहादयः कलकलः १ सहायमानयात्रि
 वकी १ लीचमात्रे १ विकात्रकात्रलोहाकि १

उद्यनायिका नान्यथा कर्तव्यं किं च खनन निरुद्धे यत्पि व्यर्थं गवता लोले मूला लुब्धं वा ये स्त्रीकर्म भिरावृष्टम् ॥
 तथा विद्या धिन्या प्रविशन्त्या मनूय कुरुमाह ॥१॥ मनीषिणा
 पंडितैः कृतं वकीति तेषां यः पाठितं यदाह

मोहनिवि क्रियन् यथान्तर्यमसिन्धुवधीमा४॥ अथ विनवः

लिपूषा'वदि'सु'माऊ'द'का'नि'य'म'वि'धि'रु'ला'नी'व'रु'ि'वा'यो'प

नैकी। गिनिषमै पंचचात्रय ह्यहं सा सुंकणी। नियमिहय जिखदा।

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५१ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५१ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५१ ॥

[illegible]

॥ ५८ ॥ अनासुरावो ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

इकी ॥ यदा सङ्ग्राह्यं गतिः

^{वक्रपाद्य न कर्व २} ^{विक्रमिनि १०} ^{सुंजनी १} ^{यस्माद्विना १} ^{उवकुपीयस्य १} ^{ननदियदा १} ^{रुपा १} ^{८:१३} ^{६५}
^२ ^३ ^४ ^५ ^६ ^७ ^८ ^९ ^{१०} ^{११} ^{१२} ^{१३} ^{१४} ^{१५} ^{१६} ^{१७} ^{१८} ^{१९} ^{२०} ^{२१} ^{२२} ^{२३} ^{२४} ^{२५} ^{२६} ^{२७} ^{२८} ^{२९} ^{३०} ^{३१} ^{३२} ^{३३} ^{३४} ^{३५} ^{३६} ^{३७} ^{३८} ^{३९} ^{४०} ^{४१} ^{४२} ^{४३} ^{४४} ^{४५} ^{४६} ^{४७} ^{४८} ^{४९} ^{५०} ^{५१} ^{५२} ^{५३} ^{५४} ^{५५} ^{५६} ^{५७} ^{५८} ^{५९} ^{६०} ^{६१} ^{६२} ^{६३} ^{६४} ^{६५} ^{६६} ^{६७} ^{६८} ^{६९} ^{७०} ^{७१} ^{७२} ^{७३} ^{७४} ^{७५} ^{७६} ^{७७} ^{७८} ^{७९} ^{८०} ^{८१} ^{८२} ^{८३} ^{८४} ^{८५} ^{८६} ^{८७} ^{८८} ^{८९} ^{९०} ^{९१} ^{९२} ^{९३} ^{९४} ^{९५} ^{९६} ^{९७} ^{९८} ^{९९} ^{१००}
 धयध्वसमागता ४। मयि सुष्टि हिला काना व काय धा स्ववकिना
 ॥ न गो मन्दा निलो धु न के मला के य धा किना। पुन नरु सह सुला
 दहा यामा स वृ क हा ॥ स धि नला हय ध्व क दहा व क ४ धा ना धि क।
 वा च स्या नि न वा च द धा ३३ लि ऊ ल का मनी ॥ ए व य दान क र ग व।
 व क ४ ध यामा स २ वृ क हा ना नि ति स क था र २: क र २: २ २ य द ३ ३ ३ नि य न म ए व २: स न।
 अ नि मि ति धा म वि द वा ना का य व धा दि शा नी न न व ल न म वि न २ व क ४ १ अ य व धा म न व व: व द वि का।
 न न य दान ना का नि ना य ४ न का म स द धा कि र १ १ ल य ध न न य द क म ला नि मृ क: अ का ना नि व द धा

^{यत्न किय नि आ ना वि रु आ ला य न द १: स क ल क ल क २: य र्थ य य वि रु दान ना य व क थ। चि द सु मी ति का व:।}
^{न द व ३ व म न आ मा की सु न १ क र चि न य द १: य न १ व वी वि द क ल य धा ३ न मा द ॥ न न य ३ न वान।}
 ना मृ ४ न ४ प ४ य ४ ध ४ य ल ४ वि नि य क ला क र्थ न ह स्य ति य
 ४ ॥ ल य द क य मा दी धु कां य का र्था म र ४ सु न ४ ३ य ध व य
 ला का ना धु म के रु नि वी लि न ४ ॥ य न ना व न म यी स्य न ना ति न
 वि ना क र्थ १ दी धि का क म ला न म धा या व न्मा ३ १ सा ध न ॥ स र्वा
 य ना न ठे मा ना न्म मा का वि ला धा १ ना न क र ति ना म य स ३: ए ना व ल वि मा ना ग का य स २
 उ व ना ना ज ना ना वा २ क ल व न ल उ ल अ ली ल धा हा यी २ न ग र २ १ म व २ मा उ का ल व धा व र ल २ ल म
 ध म क रु न यि ला का ४: उ य ना ३ नी ना म य क र २ की र्थि का या: य म वि का म: सु ना वा दी उ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 लयमीलितं कल्पद्रुमं विरुचयती ॥ १ ॥
 ॥ नन्तां मय्यधुहसि ॥ सदयान्तरपल्लवा ॥ मुक्तिस्तुल्यं दया
 कान्तां विद्यन्तं नन्दनं द्रुमा ॥ वीर्यं स हि सन्तं ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 वलामिलं वासुधैव कुटुम्बकम् ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय

नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय

नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय

नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय

नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय

नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय

^{स्वापवृद्धदृष्टिपुत्रनिषिद्धनिवृत्तिर्यापायायसक}
^{नवा नदिः सनथा न नुकी दार्द्र्यं चित्ती नीहोवद स मयः ३ कुर्त्तामा (अउदयम्}
 स्तययन्मिन्दो ४॥ **ॐ त्यादिकलकी** ॥ सना नवदा विनिषिद्धदृष्टि
^{आनाया निय मो लर्थः}
 दिव्यवस्तु या समाधि वंशी यं स कर्त्तव्यं सिद्धा विदूषा सांता न सां
^{यल्लकी}
 तै नो वला कयनी ॥ **संन सुधा रुग्मं यम नकु** पय्यं नै इना न न सां
^{हो न वा ना जो घना वसनी ल को य सन यो विधः सन}
 यो धृष्टी नाले कथं सा ध स स न रुक् ४ **सर्ग** न यथा य म पि स्व रुक्ता क
^{लजी ३२ विरुनायुध समाधिनायक ३ आलाने ३ मूकन उक्तताः ३ नीहो कर्त्तव्य ३ समीप ३}
^{नैयै}
^{निलवृद्धदृष्टिपुत्रनिषिद्धनिवृत्तिर्यापायायसक}
^{म कल्यार्थ कर्त्तव्यः २ दृष्टिपुत्रनिषिद्धनिवृत्तिर्यापायायसक}

३१

^{निर्वाण मस्तिगमनेमा कर्त्तव्यः १ कामस्य सामर्थ्यः १ अक विकर्म दीपने धारुः १}
^{नितजर्क सूर्यवर्ग १ अथ न केन दृष्टः २ नव सु लोप्यः २ लावण्य दिना १ कलानुगमना}
 ॥ **निर्वाण रुं शिष्टमैथं शीथीयां सन्ध कयनी व वं यलु** लीनं **अमयः**
^{सा दै ती क र्त्तव्यः}
 या ना व न द व मा स्ता स दृष्ट न सु व य मा उ क न्या ॥ **अरुं** क निवृत्ति
^{सको सान रुग्मिध का नय यय न क}
 कय न ना ग मां रुं रु स शू नि क ल्पि का मी मू का क लो पी रु क सिन्ध
^{सहनी वसु न यम याल क य लं धा नु की अरुं क प्रयोजन सहनी कल सिन रु तो वा प मया ल}
 वा नै व स न पृ थ्वा रु न दी व रु नी ॥ **आ व डि ना किं शि दि व रु ना र्थी वा**
^{कृता सुवर्णस्य का नि य न ता दृ ण क ल्पि का न यरु न द न ना ति लो हि ल मू क नि दि न म द ला या}
^{पृथ्वी य न रु २}
^{वि निर्वाण मस्तिगमनेमा कर्त्तव्यः ३ मना ग व डि न}

५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

किं लयवती लयवती २ लयवती २ कतिपय २ कतिपय २ कतिपय २ कतिपय २ कतिपय २
 सावसा नाक नूपा क नागी रीता मय्या सुवका वनसा रीया नि ६
 पञ्च विनी लनव ॥ अंसा निरंसा दैव वा ययनी पून ४ पून ४ कण मय ३८
 या का यश न्यासी कृता सु न विदा मयनी द्विती यमी श्री निय का मय कस्य
 ॥ संग न्धि नि ४ ध्या म विष्टु द रु र्क वि सा ध रा म न न र्क द्वि ज रु ॥ पु नि क

रूपा २ रूपा २ रूपा २ रूपा २ रूपा २ रूपा २ रूपा २ रूपा २ रूपा २ रूपा २
 ली सुमि क लाल दृष्टि लीला न विन्द न निवा मयनी ॥ क ल क ॥ न वि
 अ स वा य य या न व या न र्क र्क नि की म नि मा द धा ना ॥ कि न न्धि य ५
 लि नि पं थ क ४ ४ स्व क म सि द्वि पू न ग्रा ण स ॥ रु वि या न ४ य य
 न मा यं ४ ४ स मा स मा द य नि हा य रु मि ॥ या ग न्धा यं ४ य य मा

आगममितिनाकाक०। यद्विद्वत्
कुरुतेनमस्तुत्येतिपुद०। यद्विद्वत्
सामान्यमिदं। कुरुतेनमस्तुत्येतिपुद०।
पुद०। यद्विद्वत्। कुरुतेनमस्तुत्येतिपुद०।

[illegible]

(Faint handwritten text in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side of the page.)

कर्ममयकथाकाव्यविशेषः १ वज्रसूत्रायामिहोक्तप्रमाणानि २
वज्रसूत्रायामिहोक्तप्रमाणानि २

नियथगमिनीसीदं गदीयी कृता ४॥ १२॥ ५० निधीमन्त्रालिदासक
नीकसावर्षिकवसहाकायकासदरुनानामहतीय ४ सग्न ४॥

अथमारुपनायणसगी विवंधकासवधुविवाधिता विधिनायति
यादं शिष्यानां नववधुयसं सशुवदनी ॥ अथंनयनयकायसायलः

दवता १ मारुपनासगी २ अनायकासुवधुयनरुव ३ वतिः २ नीचवधुयसगी साधु विधाकाकहृदकनर
यात्युनियानननायुति वाकामिकयनसर्थः २ अथंनयनयकायसायलः ३ वतिः कृती १
नियलीववाधनदुतिविधिः १

४३

पलया १ कल्याण २ कर्ममयकथाकाव्यविशेषः ३ अथंनयनयकायसायलः ४
नववधुयसं सशुवदनी ॥ अथंनयनयकायसायलः ५

यानां निधिनं विनायनं न विवदरुथानं रुधय ४ प्रियं सत्यं न निमः

मदरुनी ॥ अथिजीविननाथजीवसीत्यं किधायोक्तिरयानं याय

४१ ददृष्टीयं मा कृति ४ किमो रुनकोपानलरुसकवली ॥ अथसा

पुननयविदली वसंधानि नधूसनसनी ॥ विललायविकीष्टुमृ

अथी निमलरुसवी २ वम ३ कुविल ४ न ५ अथंनयनयकायसायलः ६ विलाय ७ वतिः कृती ८
नमालीनीलीयसाः सा १ काय २ विमुक्तकजाय

४४

क्रियः कठिना रुक्मिणीयः पूजा सम
 हृदयं न दूषयति न च विदुः सति नृणां कथं पुनश्च भक्तिवशात् कुर्यात् कृत्यं विदुः नृणां कथं पुनश्च भक्तिवशात् कुर्यात्
 कृष्णसमदूषयामि यकं च नीलं ॥ उयमानमसहृदिलासिनी कयली
 यरुवेकानि सकृयाः नदिदंगतसीदृष्टी दृष्टं न विदीर्यै किं नो ४ स्व
 लम्बि यः ॥ कं नू मां व दधी नजी विना विनिकी र्य कदा हि न सो दृ द
 ४। नलिनी कनक्षरुवधना जल संधानं वा सि विदुः ४ ॥ कुत वाः
 पद्मिनी नमस्ते प्रभुवरुणा लक्ष्मणस्य साधनं कवर्गवद्व्यादौ च कायकायस्क कर्माणि
 नलिनीयति कुरुत स्वस्ति नमस्तुभ्यं धनं यथा सा दत्ता कृष्णलायनी तं सो रुदय न ता दृष्टः सत् २
 नीयं वा सति धनं यथा वज्रं ति विदुः ॥

नमो विधि र्ये नमो पुं तिकूल शु ननं मया कर्तुं किं सै कां न गमै व दधी नी
 विल पन्ने व नय नदी यन ॥ सप्त सिं सप्त मख ला सु खी वं नं दग्ग रु ख
 लिनं ययं नी। चू न क स न दू चिनं क ग। न्यै व नं भां त्य ल ता लि ता नि वा
 ॥ द दं य व स सी ति स ल्यि र्य य दं वी च रु दं वं सि के न वी ड य वा अ य दं न

यदि न वदं वदयथा न यदमन न यदमन कथा कथं त्वमन ॥ गी ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥
 यदि दं त्वमन ॥ कथं कथा वक्ति ॥ यत्र लीकन वषया सिन ॥ यत्र
 पक्षी यदवी मरुत व ॥ विषिना जननं पव शिरं ॥ त्वं धी नं खल दहिनी
 सूर्य ॥ न ऊनी किमिवा वसु ॥ यत्र सा र्जघन न यद विह्व वा ॥ वं सः
 किं प्रियं का सिना प्रिया ॥ त्वं दंत पां य प्रियं कं वी ॥ यत्र ॥ न य नान्यं नृ
 नमः हवन्त ॥ न यत्नानि नायिका कं हवन्त ॥ मन्त्र ॥ त्वं दंत पां य प्रियं कं वी ॥ यत्र ॥ न य नान्यं नृ
 ना कला ॥ पूजा का सा कला न किमपि गति न व त्वसा ॥ दं मा ॥ यत्र ॥ न य नान्यं नृ

यदि न वदं वदयथा न यदमन न यदमन कथा कथं त्वमन ॥ गी ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

यदि न वदं वदयथा न यदमन न यदमन कथा कथं त्वमन ॥ गी ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥
 यदि दं त्वमन ॥ कथं कथा वक्ति ॥ यत्र लीकन वषया सिन ॥ यत्र
 पक्षी यदवी मरुत व ॥ विषिना जननं पव शिरं ॥ त्वं धी नं खल दहिनी
 सूर्य ॥ न ऊनी किमिवा वसु ॥ यत्र सा र्जघन न यद विह्व वा ॥ वं सः
 किं प्रियं का सिना प्रिया ॥ त्वं दंत पां य प्रियं कं वी ॥ यत्र ॥ न य नान्यं नृ
 नमः हवन्त ॥ न यत्नानि नायिका कं हवन्त ॥ मन्त्र ॥ त्वं दंत पां य प्रियं कं वी ॥ यत्र ॥ न य नान्यं नृ
 ना कला ॥ पूजा का सा कला न किमपि गति न व त्वसा ॥ दं मा ॥ यत्र ॥ न य नान्यं नृ

यदि न वदं वदयथा न यदमन न यदमन कथा कथं त्वमन ॥ गी ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

... ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ...

पूजाविधि विष्णुः किममनननिकुलस्य ह्यह ॥
मन्त्रिनिर्वाह नरुकासा
वसन्ताद्यः प्रसन्नः ॥ १२ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥
निकटस्थः ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥

विष्णुमयं विष्णुनिष्ठात् स्वीकृतं निष्पद्यते ॥१॥
श्रुतः स्यात्सर्वलोकप्रदो नित्यकृद्गुणैः २
प्रसादात् सर्वलोकास्तस्मात् प्रसीदति ॥

^{जोमी कर्करी मनायथ मिर्काना नी किर्क क २}
^{कर्मि धि कर्काले १ २ किर्कटवली मरवी मरवत}
 यमन ४ ययथ निमना किमखं य नी ययन ॥ कदा विदास न सखी म
^{हयो याव १ वनवासी}
 खनसा मनायथ हं चि न यमन स्थि नी ॥ जया च नानवध निवास मां त
^{हल सी द य ३ ल किय का व सी न अल त सी हल लो रु तपः ॥ कि य नः सा कि मा न मना स्या लो नि म न स्थि नी}
 न ४ रु लो दया ना य न प ४ समा धय ॥ अथ मूत्र्या कि निव ग ना मिः
^{ऊ न के नी}
 एम कृ ता ख न रु रु नू ग म ग्री य सा ॥ य जा सूप श्च मू य थि न क दा ख्यः
^{क ना य नू रु लो काना क ल्य सी का न रु रुः कि मर्थ ॥ तथा निय मा य २ या वृ ती क र्करी २}
^{अ न न र्क २ या न र्क रु रु रु कि रु न ना वा य स्या कि रु रु}
 य साः सा ॥

^{न सा एम मा मरु ४}
^{नि य ल ह वि वि ल र्थः २}
^{हृ ग र्थ कि नि य ४ य सि धा रु वि न र्था नू रु नि का वः २}
^{पु क र्थ एम धे ग र्थ व न्द न य सा ४ सा २ क र्क नि व र वि व रु य द नू न ना क सा न थि व रु क}
 या ऊ ग म म र ग म ग्री नि र व र्थ नि र व रु न ॥ वि मू य सा का य म रु या यो नि थ्यः
^{चि र्म २}
 या विला ल हृ छि ४ य वि ल्प य न्द ना ॥ व व न्ध वा ला नू व य रु व ल्क लं य
 या ध ना ल्प ध वि गी र्थु र्म रु मि ॥ य थ म सि ध मं धू य ४ नि ना नू रु ऊ ठा कि
 व र्थ व मं रु रु दान न ती ॥ न म टू प द र्थ लि कि न व र्थ क र्क म र्क व ला स रुः
^{म न या नू रु य ल कू टि ना वी धि व ल्प य म रु रु २ अ नू रु ३ य क ना ए क सी मा ना र्ग क सा य थ वि कि}
^{हृ वि र्थ व सिल न सी रु किः स र्थ ना ग न र्क नि म र्थ रुः २}
^{म न र्कः क लोः ग्वा न म रु द र्थ दि रु वि रु रु}
^{ए न हृ रु रु ना य पा द य ति र्थ क र्क क र्क २ स रु ल व ल सा मी ग न र्क व रु}

^{संयव पूर्वनिवृत्तकथा २} ^{नासाधनासविद्यतिहावली १} ^{मेनीकली} ^{सलादिर्त २} ^{मेयो २ काथीसु नजद्वर्त २}
^{युनार्थ १} ^{सुजीसुवेली १}
 मैयि यकाशर्त ॥ यतिकी सांरु नंवा सविख्या वितायमोजी दिशुल
^{दक्षन १} ^{कुनी १}
 मंरानयी ॥ का विरुतं युर्वनिवृत्तया कथा सनाग सैस्यान सनागुणाः
^{कुतशा १ कनागः १} ^{कुमा १} ^{दले १} ^{नेन नाव लिता १} ^{निवृत्ति १} ^{निमस १} ^{कुली १}
 स्यद ॥ विरुष्टनागम दधवा निवृत्ति ४ सुनाङ्ग नागम नीता च केन्दुः
 कान्। कृष्णकृ नादां नय विरु नाकु लि ४ कुनी कृष्टु यदीयी नया कंन
^{विहृष्ट १} ^{कृष्णकृष्टु यदीयी नया कंन १} ^{संखलाक १} ^{सुजीसुवेली १} ^{मेयो २} ^{काथीसु नजद्वर्त २}
^{जयमोलायीपीनः १} ^{मेयो २} ^{काथीसु नजद्वर्त २}
 विहृष्ट कृष्णकृष्टु यदीयी नया कंन ४ सुनाङ्ग नागम नीता च केन्दुः

^{यकाशर्त १} ^{युनार्थ १} ^{सुजीसुवेली १} ^{मेयो २} ^{काथीसु नजद्वर्त २}
^{युनार्थ १} ^{सुजीसुवेली १} ^{मेयो २} ^{काथीसु नजद्वर्त २}
 ४॥ सदा रुणीया यानिवरु नयार्त ४ स्वकं वीय यो नयियां सद्युयर्त ॥
^{सुजीसुवेली १} ^{मेयो २} ^{काथीसु नजद्वर्त २}
 अंरुणी नसा वाकूलता यक्षयनी निषदूषी सुष्ठि लणव कंवल ॥ यंन
^{युनार्थ १} ^{सुजीसुवेली १} ^{मेयो २} ^{काथीसु नजद्वर्त २}
 मंरुणी नसा वाकूलता यक्षयनी निषदूषी सुष्ठि लणव कंवल ॥ यंन
^{युनार्थ १} ^{सुजीसुवेली १} ^{मेयो २} ^{काथीसु नजद्वर्त २}
 ली मृविला सयष्टिनी विला लडा हेदु विधी नना सुव ॥ अंन दिनासा
^{युनार्थ १} ^{सुजीसुवेली १} ^{मेयो २} ^{काथीसु नजद्वर्त २}
 वरु सुलो यवर्त नाया नया कडु विरु नयार्त ४ सुनाङ्ग नागम नीता च केन्दुः

^{मा का १० ग ना र्थ कृष्ण य न नि ना २ का ल क का वि न न २}
^{लो या ११ किल वा ली या पा य ल वि धा नी य न व क क जी व नी न स य क जी व न स ह वि ति हा व ४। न द वा ह १२}
 य क स्या ४ किल या ल ल वि धि न्न वृ क वृ हि च वि ति क सा ध न थ नि का मः
 क का वि वि द्य न व नि ना न क श्र न ली ध न स रू न न य। य पा स य थ वा वि कि
 न किं ता न थ यु वा स हां मां ल मं स थ दू र्द गं ॥ किं नां क ली प द्य स ना कि ना
 ध ना ४ य था ध ना ल ध नि या न दू र्दि ता ४। व ली म त स्या ४ स व लि ना ४ प थः
^{सि का ल स्या स रु स म का ल म व २ म श्व लो मी क क २ उ ड ग म नि न २ जी मा व स न ३ न र्थ न न न ३}
^{स मी ल वा यि म दि ल य धि ना वा क स्या स रू क व ती २ क ली था य न ली म स कि नी रु ता ४२}
^{कि क का ज ल स का हा र्थ स रू नी नि य स ता कि न ली का ३ ४ आ दि स य क व कि व र किः २ उ ड १}

५८

^{क क नि म क न न न द न क नि ना र्थ स र्थ स न म ना क र्ज क नी न ना का क स मा रु ॥१}
^{या का ११ य नि या था १}
 दि न् क म ल नां रि प थ मी द वि न्य व ४ ॥ शि ला ली था ना म नि क कः
 या सि नी नि व न् वा स्य क न वा न वृ षि ष्। य ला क य नू नि चि र्म लि न्म
 य मी हा न य ४ सा क र् व लि ता ४ द पा ४ ॥ नि ना य सी ल थ दि मा रु न्मा निः
 ला ४ स रु स्यां वा नी म द वां म न ल्य ना य न स वा क लि लि य क वा क था ४ य ना
^{यो ध ने व स २ सा कि ले लि ना र्थ न म की क र श्र या कि श्र उ क व र्थ ५ ध म थ ज ना ति न व स व रु १० मि ति}
^{रु स्या हा यो व नि नाः १ उ द क वा सः स रू था स व य र्ज क र्थ स्याः लो मी क क ३ सा रु ल वा स य ना य ११}
^{वि ल म नः १}

वि ना य व र्ज क

^{याथार्थः २ उच्यते किं ८८४२ सत्यमयं दासो न्ययं याथायुक्ता किं दयानंदं यात्रिना किं दयानि}
^{अथ नीत्र वलाकिः १ दाथय कृषि सादृश्यं मनाय कृषि नीत्र १ जाक कि सुजयुषा १ दयानि १ वसनी कि}
 पंचले विलाचने सुवादि सायन्य निवयय ३३ नं ॥ यदयनं याचं नियाप
^{सो न्ययं १०}
 वृत्तयः ननु पमि र्यय क्रिया निरुद्ध व ४१ नं था कि नं शी ल सदा न द र्श नः कः
 पश्चिना स र्यय पद ल ना रु नं ॥ वि की र्ण स फ र्ति व लि य का नि कि सु था
^{आ का म न क क वि नः}
 न गं र ४ स लि ले दि वे थै नं ४ य था ल दी यो थै नि क र नं ना वि ले मो दी व
^{न ग म स व लि कि ऊ ल ४ स या वि नः न ग म स ला द इ ह मा ह १३ अथ स व ला क नी य था का द नि २}
^{यि य वि ना ली कि रा व ४१ वि क्रि या यः स फ र्ति व लि ४ या या नी न व स रु दि ३ नी ले रो व स रु दि ३}
^{इ का रु न उ का नि रु नी ल य वी न ४२ न ग या य मे व या वि न स या रु स वी न}

॥ ३१ ॥
 किं ३३
 किं ३३
 किं ३३

^{म न स र ग म व ना र्थ का सी य सा रु या उ न द व थो म श्रु को दि ला ध म स व न म कि वि रु मि कि ला वः ॥ २}
^{का वि नी म र्क १ कृ ध ना न वा र्थ का सी य व र्थ १ उ उ ना १}
^{१ य वि की रु कः मि वि नः स र्वी ४१ कृ ला न्य कि रु ना न्व या वि रु म न ११}
 न ४ या वि रु पं स मा न्व य ४ ॥ अ न न ध म ४ स वि र्ण य स र्थ म कि व न्ने मा
^{य नि रु म नः १ इ वि नि रु मि ला य व ति १}
 न ४ य कि रु कि रु वि नि ल य म ना नि वि ष या नि का म था य दै क व व य
^{ली रु म १ स य रु १ क न रु ना वि र म १}
 नि रु रु स र्थ म ॥ पु य क स ला न वि र्ण य स र्थ म ना न म र्थ य र्थ स र्थ कि य
^{ल य व १}
 रु स र्थ म ॥ य न ४ स र्थ म न न र्थ म रु स र्थ म स नी वि रु ४ सा य प दी न म
^{य सा रु १ सा धू ना र्थ म व न ना कि १ स रु रु र्थ म १ प लु के १}
^{म र्थ २ स क रु य द म १}
^{स र्थ सा क य दी न ह या दि रु म १}

॥ ३२ ॥
 किं ३३
 किं ३३

^{आकांक्षा ॥ २ मदन किं नो वाहता ॥ १ ॥}
^{वन्दे कला मिदं ललापि} ^{अवला कयनः १ दिवसे १} ^{उप नर्तन रुक्ति किरु मव स्त्रिये निहायः १}
 ॥ १ ॥ ^{मदन ललापि} ^{उ माने १} ^{उप नर्तन रुक्ति किरु मव स्त्रिये निहायः १}
 यै मिथु को ग्य मदन तव शिरः तव प्रियं यं ध्वजु वा वला कि त १ कना निल
 श्री गै वि सै स्य व दूधा न वं कु सा ली य सै नां ल य दू ॥ ४ ॥ ^{उप नर्तन रुक्ति किरु मव स्त्रिये निहायः १}
 सि रगे नि वि शन स सां धि यूं वा श्र म स शिर न क य १ न नी डे रा र ग न ल
^{उप नर्तन रुक्ति किरु मव स्त्रिये निहायः १}

^{उका १}
^{उका १}
 रु स का कि नै यं यै न मिं स्य मि व सा धू व दि रु ॥ ५ ॥ ^{उका १}
 दि रु न ना स ना ग न सां न शं बा क र्ण सि रु ॥ ६ ॥ ^{उका १}
 व कि नी वि व लि ता न अ न न रु मे क न ॥ ७ ॥ ^{उका १}
 नै नि वी ध सा धा न व य न क ह रु ली य द थ सै म कि मि वा कू वा प्र वी क
^{उका १}

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

नृ. निरायमा ८५२
नगेन नैकिता।

वैष्णवमंत्रोच्चारणव्यासगीता

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

प्रः सुखेन भगवतः सन्तः २
 विविधैः विवाहैः समाहितैः विविधैः २
 पत्नीः स्त्रीः पुत्राः पुत्राः २
 नोयमादनं ४१ क्रियाणां खलु धर्माणां काम्येषु लसाधनं ॥ धर्माणां वि
 यदीनां च का प्रियं पार्थिवी पुनि। धूर्वाय नाधरी नस्य कर्मस्योक्तं सिनीमन
 ॥ अथ भूमनय ४ सध्वः धूर्वायिला उंगुनी ॥ ६० दस्युं यमं नूताना ४ पुनि
 कः ४१ कि नम्य ४॥ यद्वं सस्य गं सानं यद्वं विविधैः नैः ॥ यद्वं नम्यं न
 अलन २ सध्वः २ यद्वं ४ सा सानं सया ॥ ६१ ध्वं २ वसमानं २ अकिं नवकः २ ६२
 यद्वं नम्यं पार्थिवी ॥ यतः यद्वं नम्यं सानं सानं सानं सानं ॥
 मदलीक ४१ असाहि विविधैः सध्वः २ यद्वं ४ सा सानं सया ॥ ६१ ध्वं २ वसमानं २ अकिं नवकः २ ६२

प्रः सुखेन भगवतः सन्तः २
 विविधैः विवाहैः समाहितैः विविधैः २
 पत्नीः स्त्रीः पुत्राः पुत्राः २
 यद्वं नम्यं पार्थिवी ॥ यतः यद्वं नम्यं सानं सानं सानं सानं ॥
 मदलीक ४१ असाहि विविधैः सध्वः २ यद्वं ४ सा सानं सया ॥ ६१ ध्वं २ वसमानं २ अकिं नवकः २ ६२

उपदण्ड... कन्यानिर्मितं
 वरं विरु... ४ संकन्यार्थ... मिनिवा ना
 यदि... साधव...
 याज्य... विरु...
 पुन... सिद्धयदिसव...
 कन्यावहा...
 मान्या...
 कन्यावहा...
 मान्या...

पुन... सिद्ध...
 सय...
 काय...
 ली...
 उक्त...
 कन्या...
 कन्या...

कन्या...
 कन्या...
 कन्या...

कौमुदीसूत्रम्
प्रथमः सूत्रः
अथ कौमुदीसूत्रम्
प्रथमः सूत्रः
अथ कौमुदीसूत्रम्
प्रथमः सूत्रः

उपहो कलनी २ या अनन्त उच्यते कौमुदीसूत्रम् २ हा धानमपि सुविशेषविधा प्रथी
प्रकृतलानि २ याति २ सुटिकप्रामादिक
निमिमा ॥ यद्यसुटिकं रुमुष्य नैकीभापानयं किमिआतिषाधुनि
विम्वानि याध्ववैयपहायनी ॥ यद्यसुटिकं रुमुष्य नैकीभापानयं किमिआतिषाधुनि
यना ॥ अनरुहिसासुमिमाध्व ॥ ददिनयारिसाधिका ॥ योवनननव
यायसिनीनन ॥ कसमायवहायकि ॥ यदसमल न निडासुहाव
यतः ॥ अरुहः सुनीतर्क ॥ अनाहलीयात्यायानमित्यमः ॥ उच्यते कौमुदीसूत्रम्
कामाना ॥ २ मिसुनिमिनन ॥ यमनः ॥ मद्यधुनवि ॥ अथविदीया ॥ उच्यते कौमुदीसूत्रम्
ननीयः ॥ ननीनवा नवयदा अननन ॥ इदिनडालेदधन मिकेननकोषः ॥ २ कामाधोनी

साधिका २
०
॥

कौमुदीसूत्रम्
प्रथमः सूत्रः
अथ कौमुदीसूत्रम्
प्रथमः सूत्रः
अथ कौमुदीसूत्रम्
प्रथमः सूत्रः

कलपादादित्यासं कुलीकव्याजिनी ॥ एकसाज ॥ ०
वससुगतिदयाय कुलीकम ॥ एकसाज ॥ ०
दिनाथकमिमिमदिनी ॥ उमादययन सधिनोमायका ॥ २ वल्लुहा ॥ २
पर्याय ॥ १ रुदिकि ॥ २ सकम्पाय ॥ नलिगाहुलिनकुने ॥ ३ यदकाय ॥ ४
कना ॥ ५ सुदी ॥ सायसायार्थिन ॥ ६ यिया ॥ ७ सनानकनरुकाया ॥ ८ सफ
विद्याधनाधनी ॥ ययवयनवर्ध ॥ ९ सगविगन्धसादनी ॥ १० कलानकसु
यादिया ॥ ११ ययव ॥ सवननपनी ॥ १२ सगविगन्धसादनी ॥ १३ कलानकसु
नगनस ॥ १४ य ॥ सगविगन्धसादनी ॥ १५ कलानकसु
नगनवदि ॥ १६ सगविगन्धसादनी ॥ १७ कलानकसु
दिकामनीका ॥ १८ सगविगन्धसादनी ॥ १९ कलानकसु
गलनमादनीमादयिहयहायसगलनमादनीयनय
समीपकाननमित्यर्थः ॥ २० ययव ॥ २१ कलानकसु
ययव ॥ २२ कलानकसु

साधिका २
०
॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥

विवाहाहोत्रादिभिरुक्तवर्गः २
अथप्रायश्चित्तः ३
यथा ४
अथ ५
अथ ६
अथ ७
अथ ८
अथ ९
अथ १०
अथ ११
अथ १२
अथ १३
अथ १४
अथ १५
अथ १६
अथ १७
अथ १८
अथ १९
अथ २०
अथ २१
अथ २२
अथ २३
अथ २४
अथ २५
अथ २६
अथ २७
अथ २८
अथ २९
अथ ३०
अथ ३१
अथ ३२
अथ ३३
अथ ३४
अथ ३५
अथ ३६
अथ ३७
अथ ३८
अथ ३९
अथ ४०
अथ ४१
अथ ४२
अथ ४३
अथ ४४
अथ ४५
अथ ४६
अथ ४७
अथ ४८
अथ ४९
अथ ५०
अथ ५१
अथ ५२
अथ ५३
अथ ५४
अथ ५५
अथ ५६
अथ ५७
अथ ५८
अथ ५९
अथ ६०
अथ ६१
अथ ६२
अथ ६३
अथ ६४
अथ ६५
अथ ६६
अथ ६७
अथ ६८
अथ ६९
अथ ७०
अथ ७१
अथ ७२
अथ ७३
अथ ७४
अथ ७५
अथ ७६
अथ ७७
अथ ७८
अथ ७९
अथ ८०
अथ ८१
अथ ८२
अथ ८३
अथ ८४
अथ ८५
अथ ८६
अथ ८७
अथ ८८
अथ ८९
अथ ९०
अथ ९१
अथ ९२
अथ ९३
अथ ९४
अथ ९५
अथ ९६
अथ ९७
अथ ९८
अथ ९९
अथ १००

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मन्त्रोक्तं यथा कथं यथा
नमो भगवते वासुदेवाय
प्रतिष्ठापयितुं शक्यते ॥ ४

स्वारुचिकी लोकात्म्या क्रियमात्रमप्युक्तं न ज्ञेयमात्राः स्वयमेवाहः अथ नमो न कतिः कल मिनिहावः।
 इनाथि सुखं नृपाः किं न मूलकन एतन्निधनव हि न्यदिह नाथ लोकात्म्याः। नृग सिद्धयुक्तं साका नित्यमा
 दि यमाननेना ४ प्रसाधनं सन्निहितं पि नाय ४ धृवा प्रालोत्सादि
 न साइरुवर्ग केणीक मं न ४ क समन दीयं। यय्या। कियतु कां विदू का
 न व न्यं इवा विता या तु मयू क दा म्ना। यं य क छु क्का तु य व क न न्याः
 एतन्नाय नाय क विरु क मं न्। सा व क वा का किं न स क का याः गि आ न
 म न ल न इवा य क या पी न क वि स धू क दा म्ना २ मूल ४ यान् न किं न ना ए स्वयं किं न ना रु न कि वि ४ २ स यो क
 व न न २ एतन्निधन मं न्। यय्या। कियतु कां विदू का
 कानि नृय न न्। किं न न ४।

यय्या। कियतु कां विदू का
 मूल ४ यान् न किं न ना ए स्वयं किं न ना रु न कि वि ४ २ स यो क
 व न न २ एतन्निधन मं न्। यय्या। कियतु कां विदू का
 कानि नृय न न्। किं न न ४।

अथ सप्रतिष्ठमस्ति नृपाः किं न मं न्। किं न न ४।
 स ४ का नि स नी ल्य क ल्। ली न दि न र्द यं पि रु यं य द्वा स म द्या ल र्वा
 नि नं धि वि र्वा। क दा न न धी न लं के ४ यं सिद्धे धि क द सा दृष्ट क थ य
 स ४॥ क छु र्थि ना लां पु क था य न कः एतन्नाय नाय क विरु क मं न्। सा व क वा का किं न स क का याः गि आ न
 । न स्या ४ क पाले प व रा ग ला रा। इ व न्ध व द्वा धि य व य न र्द ४। ल र्वा
 १ एतन्नायः क छु र्थि ना लां पु क था य न कः २ क छु र्थि ना लां पु क था य न कः ३ क छु र्थि ना लां पु क था य न कः ४ क छु र्थि ना लां पु क था य न कः
 यय्या। कियतु कां विदू का
 मूल ४ यान् न किं न ना ए स्वयं किं न ना रु न कि वि ४ २ स यो क
 व न न २ एतन्निधन मं न्। यय्या। कियतु कां विदू का
 कानि नृय न न्। किं न न ४।

यय्या। कियतु कां विदू का
 मूल ४ यान् न किं न ना ए स्वयं किं न ना रु न कि वि ४ २ स यो क
 व न न २ एतन्निधन मं न्। यय्या। कियतु कां विदू का
 कानि नृय न न्। किं न न ४।

मध्यमकालेन याः कृत्वाः ४ निवृत्तिरुक्तं नाम लीयकप्रयोजनं दूषणं दीयकसंयुक्तं स्रष्टुं च विनामस्य विरुद्धं रुदयकं
मातृमाषधवा १ सर्व्वी २ मधुविद्वान्निवृत्तिमिथ्यमनः ३ लोभनायकं लोभनीयं लोभयितुं सनायकं
युध्ययुक्तं नाल्मिमिनि ४ स्वर्गाय विहसंयुक्तं यथायथा रवितथाय विहसंयुक्तं ५ शारंगीनी २

२७३ योग बुद्धिः प्रसूते २

नदिजिवरु नदी प्रमानताका
नदीवग्न ननिमित्तद्विगा २
मायसी

निर्दिष्टं यत्रिधायमाहमलंकात्रायथाः २
जम्बुकषाकादिकः २ दण्डलम्बुलः १
दोषमात्रं दण्डलम्बुलादौ विद्यमानं १

लोनीवंकजीसनीप्रथमपुत्रादिलाषः २ अदयिसलपुत्रायवनीयक्षयकनदारुंदरुवगीतिसनात्र२५४६ दिखथः
उमासुनमं ३ कारुं हं विवाहकासनादनामं ३ लोकाववतिलकीसमायककवां निकायादिलाषः ६

काननवनवस्यस्यारुथयद्वमुपविशन्तो निनिदिनीकरुं नश्यत्तुष्टर
बलासाकीमनीत्रयात्रिममः२ एनेजीकुली

^{मनाकुरु १} ^{काययानेस्म २} ^{कलदवता ३} ^{निममाया ४} ^{गवदुथी ५}
^{जोरी ६} ^{मृजिता ७} ^{मथकुमी ८} ^{कुरिवादन ९} ^{ज्यवकत्री १०} ^{मिहृथ ११}
^{पुलासीका १२} ^{साथीन १३}
 लमादयाना ॥ नामविनाश ४ कलदवता ४ कलपुनिकी ४ पुलासी
 यमाता ॥ अकाययत्काययितयौदका कंमवापादग्रहणीसनीना
 ॥ अखलिनीयसलरुखयत्युविष्यथनेनां हिमसासनसा ॥ नया
 मुंनस्यौदशनीयलाहा दवस्कता ॥ सिग्धजनागिषीयि ॥ ॐ कवि
^{पार्थिवयूनः १} ^{रामिनः २} ^{महादवता ३} ^{वन्दुना ४} ^{सनीतिः ५} ^{लिषापि ६} ^{नकुमादिक ७} ^{विवाक ८}
^{आगसाय ९} ^{नववेकिह १०} ^{विषीयवक ११}

देव

^{आकारिका १} ^{सम्यकानन २} ^{प्रीया ३} ^{कवलीय ४} ^{सुता ५} ^{विदारु ६} ^{वृ ७} ^{कलदवता ८} ^{मथकुमी ९} ^{दिकै १०} ^{समाया ११}
^{क १२} ^{सज्जननाकानि १३} ^{हिमालय १४} ^{कुरु १५} ^{हिमालय १६} ^{प्रीया १७} ^{वन्दव १८} ^{मथकुमी १९} ^{समाया २०} ^{प्रीया २१} ^{कवलीय २२} ^{सुता २३} ^{विदारु २४} ^{वृ २५} ^{कलदवता २६} ^{मथकुमी २७} ^{दिकै २८} ^{समाया २९}
 रुसावनवृथमदिकु स्या ४ कुरीकल मथकुमी यित्वा ॥ सत्यसकाया
 सदास्तिकाया ॥ कल्लो वृषाका गसनयकी क ४ ॥ कावकव स्यापिक
 वं वरणील कल्लो वृषाका गसनयकी क ४ ॥ कावकव स्यापिक
 कारु न्यस्य वृषाका गसनयकी क ४ ॥ कावकव स्यापिक
^{केला १} ^{रूपायिनी २} ^{अथ ३} ^{नदव ४} ^{वृषाका ५} ^{विदारु ६} ^{कलदवता ७} ^{मथकुमी ८} ^{समाया ९} ^{प्रीया १०} ^{कवलीय ११} ^{सुता १२} ^{विदारु १३} ^{वृ १४} ^{कलदवता १५} ^{मथकुमी १६} ^{दिकै १७} ^{समाया १८} ^{प्रीया १९} ^{कवलीय २०} ^{सुता २१} ^{विदारु २२} ^{वृ २३} ^{कलदवता २४} ^{मथकुमी २५} ^{दिकै २६} ^{समाया २७} ^{प्रीया २८} ^{कवलीय २९} ^{सुता ३०} ^{विदारु ३१} ^{वृ ३२} ^{कलदवता ३३} ^{मथकुमी ३४} ^{दिकै ३५} ^{समाया ३६} ^{प्रीया ३७} ^{कवलीय ३८} ^{सुता ३९} ^{विदारु ४०} ^{वृ ४१} ^{कलदवता ४२} ^{मथकुमी ४३} ^{दिकै ४४} ^{समाया ४५} ^{प्रीया ४६} ^{कवलीय ४७} ^{सुता ४८} ^{विदारु ४९} ^{वृ ५०} ^{कलदवता ५१} ^{मथकुमी ५२} ^{दिकै ५३} ^{समाया ५४} ^{प्रीया ५५} ^{कवलीय ५६} ^{सुता ५७} ^{विदारु ५८} ^{वृ ५९} ^{कलदवता ६०} ^{मथकुमी ६१} ^{दिकै ६२} ^{समाया ६३} ^{प्रीया ६४} ^{कवलीय ६५} ^{सुता ६६} ^{विदारु ६७} ^{वृ ६८} ^{कलदवता ६९} ^{मथकुमी ७०} ^{दिकै ७१} ^{समाया ७२} ^{प्रीया ७३} ^{कवलीय ७४} ^{सुता ७५} ^{विदारु ७६} ^{वृ ७७} ^{कलदवता ७८} ^{मथकुमी ७९} ^{दिकै ८०} ^{समाया ८१} ^{प्रीया ८२} ^{कवलीय ८३} ^{सुता ८४} ^{विदारु ८५} ^{वृ ८६} ^{कलदवता ८७} ^{मथकुमी ८८} ^{दिकै ८९} ^{समाया ९०} ^{प्रीया ९१} ^{कवलीय ९२} ^{सुता ९३} ^{विदारु ९४} ^{वृ ९५} ^{कलदवता ९६} ^{मथकुमी ९७} ^{दिकै ९८} ^{समाया ९९} ^{प्रीया १००}

निममाया

निर्मलमूकटल्लहा २ अलिभुगयनाशिद्धः प्रायनाकुलं यशस्यार्थवपद्वत्तं २ मृधायविष्टवक्तिन
वद्ववमुलं १ इतिप्रमाणानाद्या पला भुगताजिनमस्तचिया ०:२ नमो नि २५ तः १
ललाटसंस्थिताजिह्वा नील यस्मादाहता ॥ नमो नि सं ३ उया १ ३ २

अककलाह्यकपुकाजनकलकिनी

^{इः खननिय जिना २} ^{प्रतिपदयकनी चीसायी डि ली २} ^{आविनः सु २} ^{हीनवि २} ^{अधिनयि २} ^{नयिवतिमिदिनी कनः २}
^{कुना २} ^३ ^४ ^५ ^६ ^७ ^८ ^९ ^{१०} ^{११} ^{१२} ^{१३} ^{१४} ^{१५} ^{१६} ^{१७} ^{१८} ^{१९} ^{२०} ^{२१} ^{२२} ^{२३} ^{२४} ^{२५} ^{२६} ^{२७} ^{२८} ^{२९} ^{३०} ^{३१} ^{३२} ^{३३} ^{३४} ^{३५} ^{३६} ^{३७} ^{३८} ^{३९} ^{४०} ^{४१} ^{४२} ^{४३} ^{४४} ^{४५} ^{४६} ^{४७} ^{४८} ^{४९} ^{५०} ^{५१} ^{५२} ^{५३} ^{५४} ^{५५} ^{५६} ^{५७} ^{५८} ^{५९} ^{६०} ^{६१} ^{६२} ^{६३} ^{६४} ^{६५} ^{६६} ^{६७} ^{६८} ^{६९} ^{७०} ^{७१} ^{७२} ^{७३} ^{७४} ^{७५} ^{७६} ^{७७} ^{७८} ^{७९} ^{८०} ^{८१} ^{८२} ^{८३} ^{८४} ^{८५} ^{८६} ^{८७} ^{८८} ^{८९} ^{९०} ^{९१} ^{९२} ^{९३} ^{९४} ^{९५} ^{९६} ^{९७} ^{९८} ^{९९} ^{१००}
 १०१
 १०२

^{अस्ता शिष कादि २} ^{अधिक विर्यमिना २} ^{अमान कर्वे २} ^{सु २} ^३ ^४ ^५ ^६ ^७ ^८ ^९ ^{१०} ^{११} ^{१२} ^{१३} ^{१४} ^{१५} ^{१६} ^{१७} ^{१८} ^{१९} ^{२०} ^{२१} ^{२२} ^{२३} ^{२४} ^{२५} ^{२६} ^{२७} ^{२८} ^{२९} ^{३०} ^{३१} ^{३२} ^{३३} ^{३४} ^{३५} ^{३६} ^{३७} ^{३८} ^{३९} ^{४०} ^{४१} ^{४२} ^{४३} ^{४४} ^{४५} ^{४६} ^{४७} ^{४८} ^{४९} ^{५०} ^{५१} ^{५२} ^{५३} ^{५४} ^{५५} ^{५६} ^{५७} ^{५८} ^{५९} ^{६०} ^{६१} ^{६२} ^{६३} ^{६४} ^{६५} ^{६६} ^{६७} ^{६८} ^{६९} ^{७०} ^{७१} ^{७२} ^{७३} ^{७४} ^{७५} ^{७६} ^{७७} ^{७८} ^{७९} ^{८०} ^{८१} ^{८२} ^{८३} ^{८४} ^{८५} ^{८६} ^{८७} ^{८८} ^{८९} ^{९०} ^{९१} ^{९२} ^{९३} ^{९४} ^{९५} ^{९६} ^{९७} ^{९८} ^{९९} ^{१००}
 १०१
 १०२

अथ ॥ निष्कलः २ साकः २ इन्द्रियगुणलक्षणमिहमन्त्रः ३ कुरुकारधननिर्वनः २ रुस्मीकर्म २ किन्तु २
 विधाता कर्म २ निष्कलः २ साकः २ इन्द्रियगुणलक्षणमिहमन्त्रः ३ कुरुकारधननिर्वनः २ रुस्मीकर्म २ किन्तु २

^{१५}रिमानं यथा^{१६}लं यथासा^{१७}स साद^{१८}। कर्मावलीयाथुतकुरुकुसु^{१९}मनश्चुना^{२०}

वसनालायास २ दि ह्यु ह्ययहा एयवतिमदिनीयनः ५ कर्षुप्रधुलीकनालाऊमृष्टियुह
निकाशानिलयालयामनः ५ मृष्टसुखयहीनिसमथकलेसुखदायक्यर्थः २ नधुल्लाकनायाऊमृष्टियुह
अनननीनवकनयंक विदुनादकुरुसावलगाहनः कर्षु

नायक प्रमानास ही १

यित्नीयतां नारियन्मासं नस्त्ययि कामं दाय ॥ वंश्चिद्विधां गायंति ननु ॥

कुरु विनाहा पयसी २ ज्ञानी १ वसुधैव कुटुम्बकम् १ पञ्चमस्कृतवली २ ज्ञानः १
यनमयी विनामद २ यमनः १ महान १ अहिनन्दनम् १

...न विमया
...निर्वृत्तमयस्यैव कथयन्ति

[illegible]

॥ अथ धर्मलक्षणं ॥ धर्मः सत्यं दया क्षमा श्रद्धा ॥
 ॥ १० ॥

लविन्दुवृन्द, बिक्रिष्टसूकारु, लङ्गल्लिङ्गारु, निर्यान्ध्यायनसालिङ्गारु, नी
युक्तिकेडल, लङ्गल्लिङ्गारु, निर्यान्ध्यायनसालिङ्गारु, नी

विदुषः॥ यो कसि नियावत् २ अकतं तल्लु इवाकतं तल्लु लाभाय दीसु ललाकतं तल्लु लाभाय म्वा २ दीर्घ ना

हा काये उ माय निनाम सयम ४ सुग्न ४॥ ॥ पाणिपीठ न वि... न न कने
 रणी लना ऊ दू हि उ रु न य नि। काय साध सय प्रिग्र हा द रु रु, का म सी द द सु
 र्वी म ना रु र्व ॥ व्या द न। य नि व या न सी द र ध, ग नु भे रु द व ल म्बि की गु का। स
 ध न स ग य न ध ना दू र्वी, सा न थ। यि न न थ। यि ना कि न ४॥ के न व न ग यि नः

११०

५२

कू ल रु ला, त्या द्ध नी य नि स र्व नि पा। नि नी। च दू नू नि स नि स सि नी यि थ, वि
 यू द। रु मि व न्य मी ल य नू ॥ ना कि द हा ति रु क ४ स क म य या हा रु य स य नू र्व
 न थ। क न ४। न दू कू ल म य या रु व ल्ख र्थ, दू न मू कू सि न नी वि व न्ध न ॥ च व माः
 लि नि गृ ही न सा ध र्म, हा क ना न रु सि स य का मि नि। सा स र्वी कि नू य दि रु

माकृत्वा नास्म्यरूपमखवर्त्तिनि प्रियं ॥ अथावशुनिकथायवृत्तयः
 अमरुथयमनंगशास ॥ यीकिनमपविष्टकथावर्त्ती. मूर्द्धकैयमियमूरु
 वंदयो ॥ शूलिमठकयकलद्वयेनसा. सीनिनूधनयनेदकगंष्टुका ॥ कस्याप
 श्यकिललाटलायनभाद्ययल्लविध्वनिरुह्यरुह ॥ वृत्तनैषधप्रदानव

किं न. सन्नहक सद्यथा यथुह न। किं न मनस्य मयि प्रियं यथा। दूरे स्थिते
 कर्मवधूतनी ॥ यन्मुखे प्रह्लादमकृता धनी. यत्कर्मवला यदं नखे कथयत्। यत्कर्मः
 प्रसदयं प्रियस्य कर्तुं पार्श्वे नीविषरुते स्म नतवत् ॥ ना किं कृत्य मनसा कुम्
 यत्। सायुहा कर्मसमये सखीजनी। ना कर्मादय कुरुह लं क्रिया. नं सिद्धिश्च

कथं न कुरुते ॥ दय्यं विद्याय दिका गद विनी सा क न ४ यत्ना शिना निधे द्य ४ ॥ य
अधि स्य म नू वि म्भ मा ल न ४ कानि कानि न य का य ल कुर्या ॥ नी ल क ४ य नि
कु क यो व नां का वि ली अ न नी समा श्र सी क ॥ कुरु व ल क क था हि मा म सी १२
सा ह य स्य निष्ठु र्य य धू न ४ ॥ वा स मा लि क नि वि क थ ३ न स्त न ना य द म ॥

कार्यं न त्पि या ॥ कुरु म न म थ य सा ४ नो ४ ॥ सा म्भ मा य अ नि दू ४ ख णी ल क
॥ म श्व कृ पि य म्भ आ नि धी णि ना प्रार्थि नी स्र ख म न न ना क य नू मि ख ला य ७ ॥
य ल्ता ल क गि र्नी ह स्र म स्य णि पि ली नू ना ध सा ॥ कुरु स्र यि त म दृ कृ वि छि र्य य ७
म ल्क ण वि या ग का क र्नी ॥ के षि द व दि व से स्र था स्र था म्भ स र मि क य क था ध र्य

॥ कुरु यथा रथं दृष्टं वयं वधून् न न्ययश्च कवनसुखेयमी । सागवा दनव गमहि
साङ्गवी सापि कन्मुख प्रभेक निवृत्ते ॥ १॥ शिष्यानी निधूवनाय दक्षिण ४, शीकन
स्यनरु मिय पन्नया । शिदि किंयूव किनेयू लकथा यरु देव सुभूद किणी कुरुनः ॥ १३
॥ दष्टयूक मधूवी वृ मस्त्रिका यदना विधू कुरु सु पल्लवा । शी कल न निनवाय

कल्लवी भोलियन्द हा कल न गूलि न ॥ १॥ यम्य ना कल कयू र्दुष्टु सिनी शीकना
पिमल यल ला टकी उक्क मल्ल मल गन्धवादिन याव्वी वदनवाय वदयो ॥
॥ यमिन्द्रिय सुख स्यवत्त न ४, स्यना दमू गृही क म मथ ११ ॥ लीनवा कुरु वन
लभा मथा मा म म म म व स दृष्ट म ध ३ ॥ शाकि मल्लु रि म व न म म स रू ना म

ऊविमरुदूश्वयीतिनी। कुरु कुरु विजहाय संपदः। सप्रभयगतिना ककूद
 ना॥ भवमस्य सवदाशुकरुनः॥ यावन्ती सुनयनसुकुण्डलीति सयस्तववि
 हीगसीसुवात्। सान्वरुत्तममनकमात्॥ यश्च नाकयस्तया क्लिप्ताग्भसुः॥ ११४
 प्राकयस्तु मरुविन्दुविषयः॥ सन्दनस्य कठकेशूयायसू॥ यावन्ती यदुनय

दामदद॥ वायव्यनिर्गुणीतिरुक्तायाः कण्ठसकसृष्ट्यादूयन्धनशक्य
 जलनिर्गुणीतिरुक्तायाः कण्ठसकसृष्ट्यादूयन्धनशक्य
 यकः धृक्कयन्धनवन्तः प्रियाक्षमः आव्यामसलवर्गकणलः स्वादूकायवैव
 दक्षिणनिर्गुणीतिरुक्तायाः कण्ठसकसृष्ट्यादूयन्धनशक्य

खेन्यगमरुकरप्रक्षिणीसूमाभीनयीकिषूनमनूयभखला॥ कांयूनाभनन
यालकाविने४याविज्ञातकसूभे४यसाधयत॥ नन्दनविनमयूमलायन४
सस्यरुसुनवधूरिनीकिरु४॥ २०॥ यहीममनरुयहीकप्र४यार्थिच४ननिः ॥ ५॥
नासख४सूखी॥ लाहिनायनिकदायिदायन॥ गन्धिसांनवननवागमरुयक॥ ग

उका४३नछिल्लाकलाग्रथा॥ नरुगममवलायकासूजनी॥ यन्किरुवाकनय
यथाध्यायी॥ याकहानसुखधर्मसाविनी॥ यद्यकाकिमनूयछिरागया४॥ स
कुमस्यकवनकयाविव॥ स॥ कथरुगदिवयुक्तप्र४॥ स॥ दनह्यरुनमायव
नि॥ ॥ गीकप्रवाकिकयमनीयिरि॥ दूनयस्यवननविवस्यकि॥ ६॥ नुयाययः

विवशाष्ट्रान्नी निर्मिताऽयस विरुद्धं किं न ॥ यद्वनामत्रसकं सप्तल्लथाऽ
 कचनोर्विषयिवृत्तक ७४याऽनिद्वयाऽसप्तसिक्कवाक्या प्रत्यममत्रस
 नल्लनीगर्ग ॥ स्मृतमाग्निकमथास्यदन्तिनऽहील्लकी विठयंरुंगवा सिनीऽ
 अविश्रावयत्रलोयगृक्कने वाविवाविनूद्वयद्वयद्वय ॥ यद्वयविमदिग

११३

कल्लविना निर्मिर्गस्यमिदं विवश्चता कीर्द्यथा पुनिमथासना मृसीऽ
 लामयनीयमिवश्चकुशन्धन ॥ उरुनक्तिविनि कीर्द्ययल्लनी गधयंकमति
 वाहिनाकथाऽदीर्क्षि लोवमवनाह यूथपा यद्वरुंरुमविर्साकूना ७७वऽ
 उषवृक विखनकृतास्यदा ज्ञानवृथनस लोवमसुल्ल ७१हीयमानमहिऽ

मानमान्यः पीवनायुषिषकीववर्हिषः॥ पूर्वकागकिमिवपुष्टुहिहिर्वाः
कथं कसिवरानमकक॥ संदनाकयमहर्विवस्वनाः कानिकिष्टिदिवराष
वत्सनः॥ आषसहिबूठकाहममृगे मूलसकसप्रमेश्वककै॥ आष १११
मा४५ विषदग्निधनवा विभुनिष्टियमूदीनिकायतयः॥ वदकाषमयिः

निष्ठनिकलीः सावराषविशर्नकूलागशीः। षद्यदायवसर्निग्रहीषातः पीकि
पूर्वमिवदाहुसकनः॥ दूनमस्तयनिवराषभिनाः दानूदीदिगमूलानरुः
नूनाः कानिकसप्रनवमष्टिताः वन्धकीवकूस्मभनकन्यकाः॥ सामरि४स
हयना४सहप्रणी४ः स्यन्दनाधदयकमस्तनै४ कान्ममिधयिकीष्टेन

ऊर्ध्वं संश्रुयन्ति किञ्चिदपि याचिनः सायमाननगिन्नाधने रुने ४ कर्तु
वामनयिद्यद न कर्त्तु ४ अरुभो हिय गुरु मत कर्त्तु ४ संविधाय दिवसः
हादरधी ॥ स्वयं सूयमिव संस्तिनयवी नऊ सा मरुत वरी दृष्टी गति ४ न ल्युः ॥ १७
काष्ठय कियवदू किर्त्त मील नायव लू नायव नश्चू न ॥ सन्ध्या या नू गर्जन

व ४ यदं सान्ध्रमस्तुति श्वनं समर्थिर्न । या कूत ल्यय मूदय पून लू ना. कानू
या स्तुतिकथन सायदि ॥ न कयी न क पि ४ यथा सूर्या काटय ४ कूटि स्तः
कणि कान्ध मू ४ इक्षु सिल सिनि सन्धिव लया. वरिका किनि वसा धू वल्लि ना
४ ॥ सिह कठान सटा सूरु रु ती पल्ल वय सनि मूदम मूय । य ४ य धू रु नि श्वन

पूजास्वना संविदुक्तं मित्रसांध्यसातयं ॥ यार्क्षिकयूक्तवसूधनयस्त्रिनश्या
वनाम्यनिदिताउरलिक्कियाठावक्कगूरुमकिर्लक्ष्म्यादृता. छुदयविधिवि ॥२॥
दायुजाह्यमी ॥ ननुद्रुसमिपिमनुमहसिचुमुनायनियमायमासयिात्वा
विनादनिपूनशसखीऊना. वल्लुवादिनिविनादयिद्यमि ॥ निर्विकुशदशन

कुकनयसा. वाचिरुर्नवधीवल्मपना ॥ रीतनाऊननयासमीयमसा
सलापविऊयामरुर्क ॥ वीष्टव्रापिदिषसाहययाचिर्न. मनुपूर्वमः
मूकसिवा. न्विधि. याश्चकीमवयनामहूयया. यत्पयैत्यननाहसमिर्न
॥ मयकोपमनिसिर्नकापन. सन्ध्यायुगमिना. सिमान्यथा. किन्नवः

सि सरुधर्म्या विर्ण, चक्रवाकसमवृत्ति सा सानशा निर्मिर्भष्यिह
पुस्तयं कुवा, या कन ४ सु कन्युर्वसू क्रि ना। शयमसू सुदयं सुवर्ग
ससा निनि सा कु ए म नवी ॥ ना मि मा नि मि न वृत्ति पी छि क। सु मि ल न नः
मि व स्यु कि स्ति क। ए क क सु ट क मा ल सा लि नी य व धा सु व स नि नः

120

गमि व ॥ सां ध्रु म सु मि क टा य मा क य, व क न र व म य वा वि रु कि दि क।
स म्प्र आ य व सु धा स र णा नि न, म लु ला ग्र मि व नि य शु क्रु न ॥ या मि नी
दि व स स न्धि स र व क र मि व य कि न सु म वृ ण। ए क द न्ध क स स नि न क
गं दि कु दी द्य न य न वि ह मु न ॥ ना धु म क क य नि न्द्र या य र धा ना कि

नानयननानयुष्टनशलाकजयनिमित्रतावाञ्छिता, गच्छवासर्ववर्तन
निशि ॥ शुद्धमाविलसवस्त्रित्वलं, वक्षसाङ्कवशुभास्त्रित्वयत्न, सर्वमेव
नमसासहीकृतं, विद्वत्तत्त्वसमाहृतान्नर्न ॥ नूनमूनमयनिद्रालाभ
निः, साङ्गनमसासहीकृतं, विद्वत्तत्त्वसमाहृतान्नर्न ॥

121

त्रियमज्ञादिवाचनं ॥ मन्दान्ननिमृष्टिनातिष्ठ, लक्ष्मणशरीरुनासमा
नका, न्यसयायियसस्त्रीसमागता, लक्ष्मणनववचनानियुष्टनशाचद्वनि
र्ममनसादिनकथा, पूर्वदृष्टकनयलिकास्मिन्, एतद्विज्ञानिनादि
यादिना, निग्रहस्यनिवचनमल्लं ॥ यन्मयकुरुलिनीरुल्लिषा, विद्य

ला प्रि न वि य त् स ग्रा कृ सा कृ । वि य कृ य वि धू न हि मा णु ना । अ क वा क मि
धू नी वि ड म्वा न ॥ ७ ॥ अ मा य वि य न न्ने वा द या ४ । क र्त्तु यूल व य ना कृ न न व
। अ प ग ल्क य व स्तु वि का म ला । अ य कृ म य न स व र्त्त य न्ने ४ य ना ॥ १ ॥ अ कृ ली
हि नि व क ण स अ य स नि गृ कृ मि मि न म मी वि कि १ । कृ म ली कृ न स ग्रा ३

१२२

ला य न्ने य म्वा नी य न कृ नी म्वा ण ॥ १ ॥ य ण यार् च कि न वे न्द्र न । मि दि १ । सा
नू कि न्ति मि मि न् । ल अ न द्वि य द का ग दू धि न् । स वि सी द दि व मा न र्त्त
स न ॥ १ ॥ य कृ का व म य द्वा य य न्द्र मा । अ क व म य वि णु द म्वा न् १ । वि वि य ६
न स व ल्क काल दा य का । नि म्म ल य कृ नि षू स्ति ना द या । ७ । न न्ने य ण नि य प का

लिङ्गातिस्तस्यैव यथार्थनिष्ठा नमः॥ नृकमान्मसदृशीय कल्लिकावधभरु
 गुणोदाप्रयोगनिः॥ यद्यथादरुनिकयकृद्विद्विद्वत्कान्कल्लविन्दुकि
 गिनिः॥ सखलान्नूनिदिता निमान् वाधयस्य समयागिरवलि नः॥ कल्या
 वृकल्लिश्वभूषण्युक्तिस्तु नहि नविकल्या सुन्दनिः॥ कल्या

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 अथा. आत्मनया जनि कश्चिदपि ॥ १ ॥ मानसवद्विषयि कवर्त्तव्य
 न विषयि च कश्चिदपि ॥ २ ॥ अस्मिन्नुल्लिखिते कश्चिदपि ॥ ३ ॥
 अथ लवे ॥ ४ ॥ अथ लवे ॥ ५ ॥ अथ लवे ॥ ६ ॥ अथ लवे ॥ ७ ॥
 अथ लवे ॥ ८ ॥ अथ लवे ॥ ९ ॥ अथ लवे ॥ १० ॥

गङ्गायाम् कन्यायाः कन्यायैव नवदी किं वा नवधा या कश्चिन्नदी न काञ्चिन्नदी
या नृक्षस्य निष्कृतिषु सन्तथा ॥ नारुणी वनवगलु लखथा श्वन्दु विः
स्वमिदिता किञ्चिद्विक ॥ नारुणी कर्म लिखु नायिर्न कल्यवृत्तमध्वि
उनी ह्ययं त्वमिदं किमिमी मयस्मिन् गन्धमाद नवनाधिदेवता ॥

असकसुनसुनसुगन्धिनसुखं. याकनकनयनीस्वरायन४॥ अकल
व्रयसुकिमुवाकनन. किंविनासिनिमद४कयिष्यति। मानरुकिनधवास १२७
खीरुन४. सव्यनामिदमनरुदीयनी॥ वृत्त्यदात्रमविधायनीकनरुमास
याययनपानसुहमी। यावकीरुदूयरागसुहवी. विक्कियासुयगनास

नादनी॥ अयनरुविधिआनमिर्मिता. मासुतवसुहकात्रकाययो। क
रुलीविधविशुकरुधेयोया. वृष्णिना४१यनमिद्वनागया४॥ सावरुव
वर्हिनीदया४. वृत्तिन४सुवदनामदस्याय। धूर्नुमानमयनीस्वतलक
थी. स्वदविन्दुसदकात्रगमिन्॥ अनानरुनेनगायदीध्वन४. ध्वन्याः

विजयमाससुखीयथो। तीव्रिलविमयनीयसखला, मधुदुःखयनरुग्णद
वर्द्धा॥ धामनसुखविह्वलितगमयन, याविष्णुना विजितागुह्यदुःखः।
कुरुदुःखयनरुग्णदुःखीयत्तिनयावृद्धीर्न॥ सुधरुणमणः १२७
यनपियासुखः॥ प्रयासमिवनाहिनीयति॥ क्लिष्टयन्त्रमयये॥ क

प्रगृहे, नृस्यथ। विह्वलितसुखीय॥ कल्याणद्विदुःखसखलागुह्य। याव
नीयनमरुन्त हयय। कवलपियतमाययात्तना, आनिषासयनः
मासुपकिष्ण॥ ननमस्यविगृहीतवक्त्या, ननमीलनकुरुहल्लक
। स्यावृद्धाविह्वलितवादिने॥ कल्याणकमलाकन॥ सुधनाय

विष्टहीरके शिके ४ किन्नरे नृप सिंही तमंगल ४ को कर्षी विथिलि नापः
भूरुनी दस्यगी यथितमान सामय ४ यक्षमा दनि यून ४ सिध विन ग
धमा दन व नान्त मायता ४ दुनू मूल नख माग्ज ना डि कि सु सुर्षी द्रु क वि १२॥
लाय ना रु न ४ वा स सु ४ य वि थिल स्य सियम कूर्वती यियत साम वाय

ग्रह ॥ स्युडा गन क छा य लायनी गारु द न प द द पि ता धन ॥ व्या कू लाः
ल क म ली सु ना ग वा नू य सु कि न्ति ल क यि या मूर्खी न न रि न्ति वि ष दाः
रु न सु द म धु यि लि न वि सु क म ख ली ॥ निर्म ल पि ग य नी नि ण स्य यी नाः
सि न्ति य वी वा ग ला सि र्ती स्यि या मूर्ख व र्दी यि या नि णी का म व द्धि ऊ न

नीसिधविदू॥ दर्शनपुत्रायनामदृष्ट्यगा. माउगममविदुया निवदिः
नी॥ समदिवस निजीर्थसंदि मरुगणकु॥ ४॥ गतमगमदृष्टनीसावर्धमः
का. निशीय। नयसुवतधुश्वषुद्धिनेहपूवकृव. कलननवंवसमूदातन
नसुकुलीया॥ ॥ ५॥ निशीमला. लिदासुकुलीकूमावर्धकृवमहाकाश्या

वर्नीशरोगयलुनानाम॥ ४॥ मरुम॥ ४॥ मरुम॥ ४॥ ॥ समत॥ ४॥ २॥ वेष्टमयकृ
म. मयमी. वृहस्यतिवाय. धकू. संयू. दिन॥ ॥ कमाशाय्ययदमिः
हनलिखितमिदी॥ श्री३स्वदृष्टवतापीतिनमु॥ ॥ ४॥ मरु॥ ॥

10

आशा करुणायि
ASHA ARCHIVES

1.787 I

73

ASHA ARCHIVES

1.787 I